7.तुलसी के दोहे

https://www.youtube.com/watch?v=p8i2tlUfZiU

https://www.youtube.com/watch?v=GpepVk22Lx4

[DD Chandana Samveda Class]

I.एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. तुलसीदास मुख को क्या मानते हैं ?

उत्तर :तुलसीदास मुख को मुखिया मानते हैं ।

२.मुखिया को किस के समान रहना चाहिए?

उत्तर :मुखिया को मुख के समान रहना चाहिए।

३.हंस का गुण कैसा होता है।

उत्तर :हंस का गुण विकारों को छोड़कर अच्छे गुणों को अपनाने का होता है।

४.मुख किसका पालन-पोषण करता है?

उत्तर :मुख सारे शरीर का पालन-पोषण करता है।

५.दया किसका मूल है?

उत्तर :दया धर्म का मूल है।

६. तुलसीदास किस शाखा के कवि हैं?

उत्तर :तुलसीदास भक्तिकाल की रामभक्ति शाखा के कवि हैं।

७. तुलसीदास के माता-पिता का नाम क्या था?

उत्तर :तुलसीदास के पिता का नाम आत्माराम और माता का नाम हुलसी थे।

८. तुलसीदास के बचपन का नाम क्या था?

उत्तर :तुलसीदस के बचपन का नाम रामबोला था।

९.पाप का मूल क्या है?

उत्तर :पाप का मूल अभिमान है।

१०.तुलसीदास के अनुसार विपत्ति के साथी कौन हैं?

उत्तर :तुलसीदास के अनुसार विपत्ति के साथी हैं विद्या, विनय, विवेक, साहस, अच्छा कार्य, सत्य बोलना और भगवान राम पर भरोसा रखना ।

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१.मुखिया को मुख के समान होना चाहिए।कैसे?

उत्तर :मुखिया मुख के समान होना चाहिए । जिस प्रकार मुँह खाने पीने का काम अकेले करता है,लेकिन वह जो खाता-पीता है उससे शरीर के सारे अंगों का पालन-पोषण करता है। तुलसीदास जी की राय में मुखिया को भी ऐसे ही विवेकवान होना चाहिए कि वह काम अपनी तरह से करें लेकिन उसका फल सभी में बाँटे।

२.मनुष्य को हंस की तरह क्या करना चाहिए?

उत्तर :तुलसीदास जी संत की हंस पक्षी के साथ तुलना करते हुए उसके स्वभाव का परिचय देते हैं- सृष्टिकर्ता ने इस संसार को जड़, चेतन और गुण-दोष से मिलाकर बनाया है। अर्थात इस संसार में अच्छे-बुरे (सार-निस्सार) समझ-नासमझ के रूप में अनेक गुण-दोष भरे हुए हैं, लेकिन हंस रूपी साधु लोग पानी रूपी विकारों को छोड़कर दूध रूपी अच्छे गुणों को अपनाते हैं।

३.मनुष्य के जीवन में चारों ओर प्रकाश कब फैलता है?

उत्तर :तुलसीदास जी कहते हैं कि जिस तरह देहरी पर दिया रखने से घर के भीतर तथा आँगन में प्रकाश फैलता है, उसी तरह राम-नाम जपने से मानव की आंतरिक और बाह्य शुद्धि होती है, जिससे मनुष्य के जीवन में चारों ओर प्रकाश फैलता है।

III. अनुरूपता :

१.दया : धर्म का मूल :: पाप : अभिमान का मूल

२.परिहरि : त्यागना :: करतार : सृष्टिकर्ता

३.जीह : जीभ :: देहरी : देहलीज़

IV.भावार्थ लिखिए :

१.मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक।
पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक॥

उत्तर :प्रस्तुत दोहे में श्री तुलसीदस जी मुख अर्थात मुँह और मुखिया दोनों के स्वभाव की समानता दर्शाते हुए लिखते हैं कि मुखिया को मुँह के समान होना चाहिए। मुँह खाने-पीने का काम अकेला करता है, लेकिन वह जो खाता-पीता है उससे शरीर के सारे अंगों का पालन-पोषण करता है। तुलसीदास जी की राय में मुखिया को भी ऐसे ही विवेकवान होना चाहिए कि वह काम अपनी तरह से करें लेकिन उसका फल सभी में बाँटे।

२.तुलसी साथी विपत्ति के विद्या विनय विवेक।
साहस सुकृति सुसत्यव्रत राम भरोसो एक॥

उत्तर :श्री तुलसीदास जी प्रस्तुत दोहे में विपत्ति में हमारे साथी के बारे में वन करते हुए इस प्रकार कह रहे हैं कि मनुष्य पर जब विपत्ति पड़ती है तब विद्या, विनय तथा विवेक ही उसका साथ निभाते हैं। विपत्ति आने पर हमें साहसी बनकर उसका सामना करना चाहिए। अच्छा कार्य करना तथा सदा सत्य बोलते रहना चाहिए। भगवान अर्थात राम पर भरोसा करना चाहिए। ये सब हमको विपत्ति से छुटकारा दिलानेवाले हैं।

VI. जोड़कर लिखिए :

अ	ब	उत्तर
१. विश्व कीन्ह	विकार	करतार
२. परिहरि वारि	करतार	विकार
३. जब लग घट	राम भरोसो एक	में प्राण
४. सुसत्यव्रत	में प्राण	राम भरोसो एक

VII. पूर्ण कीजिए :

१. मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक।
२. पालै पोसै सकल अंग, तुलसी सहित विवेक।
३. राम नाम मनि दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
४. तुलसी भीतर बाहिरौ, जो चाहसी उजियार।

VIII. उचित विलोम शब्द पर सही( ) का निशान लगाइए :

१. विवेक	सेवक	अविवेक √
२. दया	निर्दया √	शुभोदया
३. धर्म	मर्म	अधर्म √
४. विकार	अविकार √	संस्कार
५. विनय	सविनय	अविनय√